संपादकीय

न्यायिक व्यवस्था पर राजनीति अनुचित

देश के इतिहास में पहली बार सुप्रीम कोर्ट के चार सीनियर जजों ने बकायदा प्रेस कान्फ्रेंस कर चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा पर मनमानी करने का आरोप लगाया है। इसके पहले भी सुप्रीम कोर्ट के जजों के बीच काम के बंटवारे को लेकर मतभेद उपजते रहे हैं लेकिन सर्वोच्च न्यायालय ऐसे मतभेदों को दूर करता रहा है। कायदे से इस बार भी यही होना चाहिए चीफ जस्टिस के खिलाफ जिन चार जजों ने पत्रकार वार्ता में आरोप लगाए हैं उस बारे में कितनी सच्चाई है यह सुप्रीम कोर्ट खुद देख लेगा। इस पर राजनीतिक दलों को राजनीति नहीं करनी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट में इतनी आंतरिक शक्ति है कि वह ऐसे विवादों को खुद सुलझा सकता है। इसमें सरकार को भी दखल नहीं देना चाहिए। यह संतोष का विषय है कि सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि सुप्रीम कोर्ट में जजों के बीच जो विवाद चल रहा है उसमें सरकार कोई हस्तक्षेप नहीं करेगी सुप्रीम कोर्ट खुद ही विवाद का निपटारा कर लेगा किंतु हर विषय में राजनीति करने के आदी राजनीतिक दलों ने इस मामले में भी राजनीति शुरु कर दी है जो कतई उचित नहीं है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और तृणमूल कांग्रेस की सुप्रीमो ममता बनर्जी ने ट्वीट कर केन्द्र सरकार पर निशाना साध दिया है। उनका कहना है कि न्याय पालिका में केन्द्र का दखल लोकतंत्र के लिए खतरनाक है। वहीं कांग्रेस पार्टी ने भी इस मामले में अपनी प्रतिक्रिया दी है कि संस्थागत ढांचे को गहरा आघात लगा है। जाहिर है अन्य विपक्षी दल भी अब इस मामले में राजनीति करने की कोशिश कर सकते हैं। बेहतर होगा कि राजनीतिक दल इस मामले में राजनीति न करें न्याय पालिका अपने इस संकट का खुद ही समाधान करने में सक्षम है उसे अपना काम करने दिया जाए।

ज्ञान-विज्ञान

उचित-अनुचित

विजयी बनने की आकांक्षा समाप्त कर देती है उचित-अनुचित की सीमाविजयी बनने की आकांक्षा समाप्त कर देती है उचित-अनुचित की सीमा साधनों की प्रचुरता के बावजूद अनेक लोग सुखी महसूस न करने पर आनंद की खोज में अन्यत्र भटकते हैं। कुछ लोग यश-कीर्ति में आनंद खोजते हैं। दुख को जीवन का शाश्वत सत्य बताया गया है। सवाल यह है कि दुख का निवारण कैसे हो? इसकी खोज में अनंत काल से मनीषियों ने अपना जीवन अर्पित किया और पाया कि दुख का कारण है और इसका निवारण भी है। दुख के कई कारण हैं। सबसे बड़ा कारण है चाह, इच्छा या कामना। चाह का न होना और अनचाहे का हो जाना दुख का मूल कारण है। हम जन्म से ही कुछ न कुछ चाहते हैं और चाह की पूर्ति न होने पर हम दुखी होते हैं। दुख का दूसरा कारण है, हमारा शरीर जो रोगों का भंडार है। शरीर के धारण करते ही रोग व पीड़ा का जन्म हो जाता है। कई बच्चे तो जन्मते ही रोग के शिकार हो जाते हैं। कई रोगों पर तो नियंत्रण हो चुका है, परंतु अभी अनेक रोग लाइलाज हैं। वृद्धावस्था में कुछ ज्यादा ही रोग उत्पन्न होते हैं। रोग से उत्पन्न पीड़ा व रोग के उपचार के खर्च से रोगी और परिजन दोनों दुखी रहते हैं। चाह का बदला रूप है आकांक्षा। हम जीवन में ऊंचा पद, यश और कीर्ति चाहते हैं। आकांक्षा प्रगति या विकास की जननी है, परंतु दुख का मूल भी है। आकांक्षा अपने आप में बुरी नहीं है, परंतु जब यह ममत्व व संग्रह की प्रवृत्ति से जुड़ जाती है तो यह न केवल स्वयं के लिए दुख का कारण बनती है, बल्कि पूरे समाज में विग्रह और विषमता का कारण भी बनती है। आकांक्षा जन्म देती है अहं और लोभ को। अहं से पैदा होता है क्रोध और संघर्ष। विजयी बनने की आकांक्षा उचित-अनुचित की सीमा समाप्त कर देती है। संघर्ष जब हिंसात्मक हो जाता है तब मूक वर्ग (जिसमें गरीब समाज भी शामिल है) हिंसा के शिकार बनते हैं, भोग-उपभोग के साधन बनते हैं, शासित व दमित होते हैं। सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था का आधार शोषण होने से व्यक्ति चाहकर भी शोषण के जाल से मुक्त नहीं हो पाता।

आज का इतिहास

नई दिल्ली (वार्ता)। भारत और विश्व इतिहास में 13 जनवरी की प्रमुख घटनाएं इस प्रकार हैं: 1607 - स्पेन में दिवालियेपन की घोषणा के बाद 'बैंक ऑफ जेनेवा' का पतन हुआ। 1709 - मुगल शासक बहादुर शाह प्रथम ने सत्ता संघर्ष में अपने भाई कमबख्श को हैदराबाद में पराजित किया। 1849 - द्वितीय आंग्ल सिख युद्ध के दौरान चिलियांवाला की प्रसिद्ध लड़ाई शुरू हुई। 1910 - न्यूयॉर्क में दुनिया का पहला सार्वजनिक रेडियो प्रसारण शुरू हुआ। 1926 - प्रसिद्ध फिल्म निर्माता एवं निर्देशक शक्ति सामंत का जन्म हुआ। 1938 - जाने-माने संतूर वादक पंडित शिवकुमार का जन्म हुआ। 1948 - राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता बनाये रखने के लिये कोलकाता में आमरण अनशन शुरू किया। 1949 - भारत के पहले अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा का जन्म हुआ। 1976 - भारत के प्रसिद्ध तबला वादक अहमद जान थिरकवा का निधन। 1988 - चीन के राष्ट्रपति चिंग चियांग कुमो का निधन। 1993 - अमेरिका और उसके सहयोगियों ने दक्षिणी इराक में 'नो फ्लाई जोन' की घोषणा की और इराक पर हवाई हमले भी किए।

जम्मू-कश्मीर नगर निकाय चुनाव

जय भगवान

चुनाव कराने के लिए भाजपा से लगातार दबाव रहा है। 22 दिसंबर को जम्मू में अपनी बैठकों में आरएसएस-बीजेपी समन्वय समिति ने भाजपा के मंत्रियों को निर्देश दिया कि वे पीडीपी पर पंचायत चुनाव कराने के लिए दबाव डालें। अप्रैल 2011 में पंचायत चुनाव में रिकॉर्ड 80 प्रतिशत मतदान हुआ। 2010 के गर्मियों के विद्रोह के कुछ महीनों बाद चुनाव हुए, जिसमें 120 नागरिक मारे गए थे।

आखिरी बार जब जम्मू-कश्मीर में चुनाव हुए तो भारी हिंसा हुई और मेहबूबा मुफ्ती नेतृत्व वाली सरकार को अनंतनाग निर्वाचन क्षेत्र में चुनाव रद्द करना पड़ा। अब पीडीपी-बीजेपी गठबंधन सरकार ने राज्य में 15 फरवरी से पंचायत चुनाव कराने की घोषणा की है। विश्लेषकों का मानना है कि मुख्यधारा की राजनीति बुहरान वानी की हत्या के बाद एक विराम के बाद फिर से वापसी कर रही है।

पंचायत चुनाव को जमीनी स्तर पर लोगों को सशक्त बनाने और सरकार में उनकी सक्रिय भागीदारी शामिल करने के साधन के रूप में देखा जा रहा है। सरकार कह रही है कि पंचायतों जैसे जमीनी स्तर पर संस्थाएं सत्ता में विकेंद्रीकरण और निर्णय लेने में मदद करती हैं। पिछले डेढ़ साल से अब तक चुनाव लंबित हैं। पिछली पंचायत ने जुलाई 2016 में अपना कार्यकाल पूरा किया। सितंबर 2017 में, गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने सरकार से पंचायत संस्थानों के पुनर्गठन की तैयारी शुरू करने को कहा।

चुनाव कराने के लिए भाजपा से लगातार दबाव रहा है। 22 दिसंबर को जम्मू में अपनी बैठकों में आरएसएस-बीजेपी समन्वय समिति ने भाजपा के मंत्रियों को निर्देश दिया कि वे पीडीपी पर पंचायत चुनाव कराने के लिए दबाव डालें। अप्रैल 2011 में पंचायत चुनाव में रिकॉर्ड 80 प्रतिशत मतदान हुआ। 2010 के गर्मियों के विद्रोह के कुछ महीनों बाद चुनाव हुए, जिसमें 120 नागरिक मारे गए थे।

चुनावों की तत्कालीन घोषणा ने बहुत आश्चर्यचकित किया, लेकिन मतदान केंद्रों के बाहर दिन-भर की कतारों ने पृथक्करणवादियों को एक झटका लगाया। सरकार 2011 के दोहराने की उम्मीद कर रही है, हालांकि कई लोग सोचते हैं कि यह समय अनुकूल नहीं है। उनका मानना है कि इस फैसले से आने वाले दिनों में हिंसा हो सकती है।

यदि सब कुछ अच्छी तरह रहा तो इससे मुख्यधारा की राजनीति को लाभ होगा, लेकिन वैसा नहीं हुआ तो, स्थिति बदसूरत हो सकती है और इसके लिए जिम्मेदार सरकार होगी। छह महीने पहले तक, दक्षिण कश्मीर मुख्यधारा के नेताओं की गतिविधियों के लिए मुफीद नहीं था। हाल ही में मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने पुलवामा, शोपियां और अनंतनाग में सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किए।

घाटी में लोकतंत्र एक बार फिर कसौटी पर

आतंकवादियों ने भी चुनावों को अवरूद्ध करने की धमकी दी है हिजबुल मुजाहिदीन ने इन चुनावों में भाग लेने वालों की आंखों में एसिड डालने की धमकी दी है। धमकी स्पष्ट है और सोशल मीडिया पर प्रसारित है। पंचायत चुनाव कराने का फैसला उस समय आया है जब पाकिस्तान अफ़ग़ानिस्तान की नीति पर संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ उलझा हुआ है। अमेरिका ने पाकिस्तान को आतंकवादी हाफिज़ सईद के पंखों को कतरने के लिए मजबूर कर दिया है, जबकि नई दिल्ली और इस्लामाबाद अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में भारतीय नागरिक कुलभूषण जाधव पर सुनवाई का इंतजार कर रहे हैं।

मुख्यधारा के राजनेताओं सुरक्षा के बिना पार्टी के कार्य नहीं कर पाए हैं। उत्तर कश्मीर में स्थिति बहुत भिन्न नहीं है। मुख्यमंत्री अब उम्मीद करते हैं कि लोग गोलियों के ऊपर मतपत्र का चुनाव करेंगे। लेकिन अलगाववादियों ने अपने सिर एक बार फिर उठाए हैं।

सईद अली शाह गिलानी के 'संयुक्त प्रतिरोध नेतृत्व', मीरवाइज उमर फारूक और मोहम्मद यासीन मलिक ने चुनावों के बहिष्कार की अपील की है। आतंकवादियों ने भी चुनावों को अवरूद्ध करने की धमकी दी है हिजबुल मुजाहिदीन ने इन चुनावों में भाग लेने वालों की आंखों में एसिड डालने की धमकी दी है। धमकी स्पष्ट है और सोशल मीडिया पर प्रसारित है। पंचायत चुनाव कराने का फैसला उस समय आया है जब पाकिस्तान अफ़ग़ानिस्तान की नीति पर संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ उलझा हुआ है।

अमेरिका ने पाकिस्तान को आतंकवादी हाफिज़ सईद के पंखों को कतरने के लिए मजबूर कर दिया है, जबकि नई दिल्ली और इस्लामाबाद अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में भारतीय नागरिक कुलभूषण जाधव पर सुनवाई का इंतजार कर रहे हैं। जाधव को ईरान से उग्रवादियों द्वारा अपहरण कर लिया गया था और पाकिस्तान लाया गया था, जहां उसे पाकिस्तान की जासूसी के एक सैन्य अदालत ने मौत की सजा सुनाई थी। पाकिस्तान चीन पर ज्यादा से ज्यादा निर्भर होता जा रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका ने पाकिस्तान की सुरक्षा सहायता को निलंबित कर दिया है और उसे उन आतंकवादी समूहों की सहायता करना मुश्किल हो जाएगा जो आत्मघाती हमलावरों सहित कश्मीर में आतंकवादियों को शह दे रहे हैं। इन सबका पंचायत चुनावों पर असर पड़ेगा।

मुखड़ा क्या देखे दर्पण में

खुशामद का कलाकंद -3

गिरीश पंकज
मो. 09425212720

पता नहीं, आपने खुशामद की कला का आनंद लिया है या नहीं, न लिया हो तो कोई बात नहीं, अगर इच्छा हो तो अपने ही शहर के किसी नेतानुमा प्राणी से मिल लीजिएगा। या फिर ऐसे शख्स से, जिसे लोग 'मिठ-लबरा' (ऐसा व्यक्ति जो बड़ी ही मधुरता के साथ झूठा व्यवहार करताहै) के नाम से जानते हों।

(कल से आगे) अभिनंदन प्रतिभाशाली लोगों का हो तो कोई बात नहीं. लेकिन अब ऐसे लोगों का अभिनंदन करता ही कौन है ? अभिनंदन होता है मंत्री, नेता या अफसरों का। या फिर ऐसे व्यक्ति का, जिसके सहारे सुविधाओं के टुकड़े प्राप्त हो जाएँ। अभिनंदन करना भी खुशामद का ही एक तरीका है। कुछ लोग जीवन भर इसे पवित्र काम मान कर दिन-रात भिड़े रहते हैं। अभिनंदन करना और अभिनंदन कराना ऐसा शौक है कि मत पूछिए। जिसे इसका चस्का लग जाए, वह गया काम से। अभिनंदन के बगैर वह ठीक उसी तरह तड़पता है, जिस तरह मछली पानी के बगैर। खुशामद करना और खुशामदपसंद होना, सबके बस की बात भी तो नहीं है।

खुशामदपसंद लोगों की चमड़ी मोटी होनी चाहिए और जेब भी हर वक्त 'फुल' रहे। जब तक जेब फूली रहेगी, अभिनंदन या सम्मान की झड़ी रहेगी। खुशामद करने वाला कंगाल हो तो भी चलेगा लेकिन खुशामदपसंद का मालामाल होना जरूरी है। ऐसी जब दो आत्माएँ मिलती हैं, तब यही गीत बजना चाहिए- 'दो सितारों का जमीं पर मिलन है आज की रात'। सोचिए, खुशामद कितनी बड़ी चीज है कि इस नाचीज को इस पर कागज काले करने पड़ रहे हैं लेकिन हालत यह है कि मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों-जेयं दवा की। खुशामद को लेकर आप लाख नाराजगी व्यक्त करें, यह खत्म होने से रही। यह तो द्रौपदी की चीर की तरह बढ़ती ही जा रही है। और क्यों न बढ़े साहब ? जब हर दूसरा-तीसरा शख्स इस कला में हाथ आजमा रहा है। आपको इस कला से प्रेम नहीं है तो न सही, और दूसरे लोग तो हैं,

जिनकी गाड़ी खुशामद के भरोसे ही चलती है।

सत्ता के गलियारों में जाकर देखिए। खुशामद करने वाले कीड़े-मकोड़ों की तरह बिलबिलाते हुए मिल जाएँगे। वक्त की मार केवल मूर्तियों पर या स्मारकों पर ही नहीं पड़ती, शब्दों पर भी पड़ती है। 'खुश-आमद' ऐसा बदनाम हो गया है कि शब्द का प्रयोग करते हुए डर लगता है। किसी को 'नेताजी' कह दो, 'गुरु' कह दो तो लगता है, व्यंग्य किया जा रहा है। खुशामद शब्द का यही हाल है। लेकिन हाल है, तो है। अब तो इसे लोग कला बताने पर तुले हुए हैं। वक्त-वक्त की बात है। इसलिए साहेबान, मेहरबान, कदरदान। वक्त की धड़कन को सुनो। और इस नई कला को गुनो। सफल होना हो तो खुशामद ही अंतिम चारा है। बिना खुशामद के हर कोई बेचारा है। ये और बात है कि जो इस जीवन को संघर्षों के बीच ही जीने का आदी है, जिनको मुसीबत झेलने में ही मजा आता है, जो सूखी रोटी खा कर, ठंडा पानी पी कर जो खुश रहते हैं उनके लिए खुशामद कला विषकन्या के समान त्याज्य है। लेकिन जिनको ऐसे-वैसे-कैसे-कैसे पैसे चाहिए, सुविधा-सम्मान और पैसे, वे खुशामद के बिना एक कदम नहीं चल सकते। ऐसे लोग ही प्रचारित कर रहे हैं- खुशामद एक कला है। इसकी मार्केटिंग कर रहे हैं। नए-नए आकर्षक रैपरों में. हर सीधा-सादा आदमी खुशामद के चक्कर में फँस जाता है। लेकिन खुशामद एक ऐसा भंवर है, जिसमें कोई एक बार फँसा तो निकलना मुश्किल हो जाता है। इसकला में बला का स्वाद है, जिसने एक बार भी इसका स्वाद चख लिया, वह दीवाना हो गया। नैतिकता से बेगाना हो गया।

पता नहीं, आपने खुशामद की कला का आनंद लिया है या नहीं, न लिया हो तो कोई बात नहीं, अगर इच्छा हो तो अपने ही शहर के किसी नेतानुमा प्राणी से मिल लीजिएगा। या फिर ऐसे शख्स से, जिसे लोग 'मिठ-लबरा' (ऐसा व्यक्ति जो बड़ी ही मधुरता के साथ झूठा व्यवहार करताहै) के नाम से जानते हों। ये लोग आपको बतायेंगे कि खुशामद रूपी कलाकंद काने का आनंद कैसे उठाएं।

बहरहाल खुशामद को अगर कला का दर्जा मिल जाए तो कोई बुराई नहीं। कुछ लोग तो जेब काटने तक को कला मानते हैं। कला हमेशा भला काम ही कराए, जरूरी नहीं। क्या कहा, आप खुशामद को कला नहीं बला मानते हैं ? भई, आप जैसे लोगों के कारण ही गलत-सलत परम्पराएँ अपना स्थान नहीं पा पातीं। आज कदम-कदम पर खुशामदखोर मिल जाएंगे, चलते पुर्जे। अपना काम निकालने में माहिर। आप अगर अब तक हम लोगों से कुछ नहीं सीख पाए हैं तो ठीक है, पड़े रहिए अपनी जगह। सारे लोग आपसे आगे निकल जाएँगे तो फिर मत कहिए गा कि हम पीछे रह गए। आगे बढ़ना है तो शर्म त्यागिए और खुशामदखोरों में भिड़ जाइए। शरमाइए मत। अब तो मान ही जाइए कि खुशामद भी एक कला है। कलाओं की कला। इसलिए जब भी आपको कोई खुशामदखोर नजर आए तो नाराज मत होइए। उल्टे कहिए- खुश-आमद-दीद!

पाठकों की बात

पत्र, प्रतिक्रियाएं, सोशल मीडिया

तब बसंत सी सुहानी ऋतु ज्येष्ठ की

जब हताशा का अंकुर हृदय में प्रस्फुटित होता है तब बसंत सी सुहानी ऋतु ज्येष्ठ की दुपहरी फूलों की वादियाँ काँटों भरी झाड़ियाँ और नदियों के उद्गम भी रेत बहाते रेगिस्तान बन जाते हैं। **देवयानी भारद्वाज**

जब धन संपन्न होता है तब अकड़

मनुष्य की चाल धन से भी बदलती है और धर्म से भी बदलती है...जब धन संपन्न होता है तब अकड़ कर चलता है, और जब धर्म संपन्न होता है, तो विनम्र होकर चलता है..!! **संतोष साहू**

खास पाती | हमें बदलना ना आया, कितने

कुछ लम्हे,, आँखों में थम गये द्य कुछ उदासी,, कुछ नमी दे गये द्य यादों में खोये हम,सबको भूलाने की राह, खोजते रह गये .. मौसम की तरह,, हमें बदलना ना आया, कितने अकेले हम हो गये.. रूकती चलती सांसे,, पूछती है जीने की वजह, ये कैसी बंदिश है प्यार की, जी नहीं रहे पर हम जी रहे .. हवायें रोज,, किसी के आने का संदेशा ले आती, साँसों को चलने का,, चंद पल और जीने का बहाना दे जाती ढलती शाम के साथ,,, उम्मीदें ढल जाती, तनहाई संग उदासी,, हमसे मिलने चली आती। **अंजना वाजपेई**

दिल के बंद कपाट में हाँ है

धड़कता है दिल कि कोई पुकारता है मुझे कि दिख जाता है कहीं धुंध में पहाड़ या पठार में या कि दिल के बंद कपाट में हाँ है मुझे स्मरण कि कहा था वो मुझसे कि मैं खो भी जाऊं कहीं तो भी मैं आऊंगा तभी मैं सोचती हूँ की वो तो डूब गया है शून्य में तो फिर क्या आशा है केवल उर में या फिर शेष-श्वास है सिर्फउसी के लिए आत्मपीड़न या फिर कुछ और।। **कात्यायनी दीपक सिंह**

परिमल से मेरी सुबहें महकती

तेरे ख्वाबों के जुगनू से मेरी आँखे चमकती हैं... तेरी यादों के..परिमल से मेरी सुबहें महकती हैं... खिड़कियाँ मन की जब खोलूँ दस्तक तुम्हारी बस जानम.. तेरे ख्यालों के जादू से ही तो अब मेरी

जहां खबरों को धोया काटा

आज का मीडिया एक आधुनिक रसोईघर है जहां खबरों को धोया काटा उबालाऔर मिर्च मसालों के साथ तला भूंजा जाकर तडका लगाया जाताहै। फिर मनमाफिक सजा संवारकर परोसा जाता है। **तपन मुखर्जी**

कल फिर सुनहरी किरणो से मत

मत देना दस्तक सुबह आकर मेरी खिडकी पे कल फिर सुनहरी किरणो से मत छूना मेरे कोमल हृदय को नही चाहती हू मै तुम्हारी जुदाई मे रोज रोज तडपना। **सरिता शैल**

आज के ट्वीट

उठती उँगलियों पर नहीं रखते इख्तियार

आतिश-ए-हसद में हम भी जलते हैं यार, उठती उँगलियों पर नहीं रखते इख्तियार, यह अदब क्या है और है अदीब क्या, दयानिधि फलसफा समझाने को हैं तैयार। **विकास शर्मा दक्ष**

वायदे सब झूठ निकले ओ तो

कसमें, वायदे सब झूठ निकले ओ तो बस हमारे दिल रखने के लिए मुस्कुराया करते थे आज ओ हमें देख कर भी अनजान हैं यही समय की पहिया है। **लक्ष्मी नारायण लहरे**